RATNA JYOTI
RATNA JYOTI

Sample

30 Aug 1988

10:00 AM

Delhi

Model: Sadesati-Report

SrNo: 101-111-105-1030 / 249

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91-9732150484
Whatsapp : +91-9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

तिथि 30/08/1988 **समय** 10:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:42:00
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:13:13 घं
वेलान्तर	00:00:36 घं
सूर्योदय	05:58:11 घं
सूर्यास्त	18:44:43 घं
चैत्रादि संवत	2045
शक संवत	1910
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	रेवती
योग	गण्ड
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो-द्रोणी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

बुध 10वर्ष 5मा 1दि

शुक्र

31/01/2006
31/01/2026

शुक्र	01/06/2009
सूर्य	01/06/2010
चन्द्र	31/01/2012
मंगल	01/04/2013
राहु	01/04/2016
गुरु	01/12/2018
शनि	31/01/2022
बुध	01/12/2024
केतु	31/01/2026

योगिनी

उल्का 3वर्ष 8मा 4दि

भद्रिका

04/05/2017
05/05/2022

भद्रिका	13/01/2018
उल्का	13/11/2018
सिद्धा	04/11/2019
संकटा	13/12/2020
मंगला	02/02/2021
पिंगला	15/05/2021
धान्या	14/10/2021
भ्रामरी	05/05/2022

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:27:33	तुला	चित्रा	4	मंगल	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			13:19:12	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	मूलत्रिकोण	1.54	मातृ	पितृ	सम्पत
चंद्र			21:49:38	मीन	रेवती	2	बुध	सूर्य	सम राशि	1.26	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल	व		17:40:25	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	मित्र राशि	1.33	भ्रातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			05:20:07	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	बुध	उच्च राशि	1.21	ज्ञाति	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			11:22:54	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि	1.20	पुत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			27:43:05	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.26	आत्मा	कलत्र	मित्र
शनि	व		02:13:44	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	0.96	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु			20:23:00	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			20:23:00	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

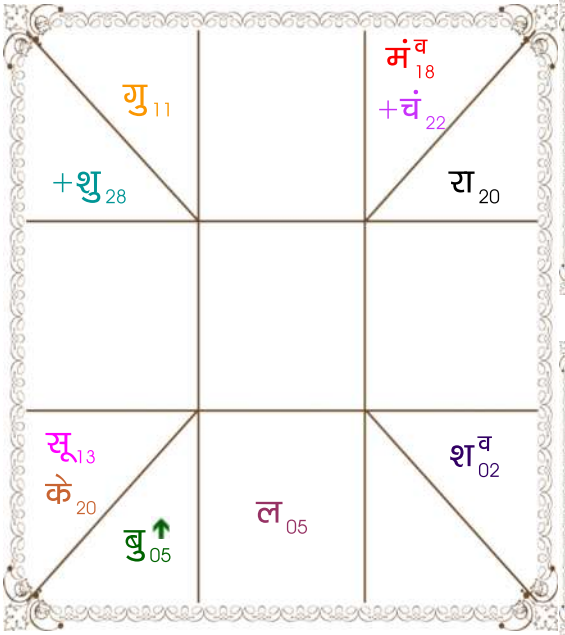

चन्द्र कुंडली

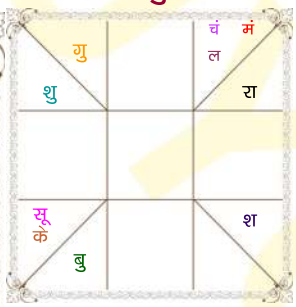

नवमांश कुंडली

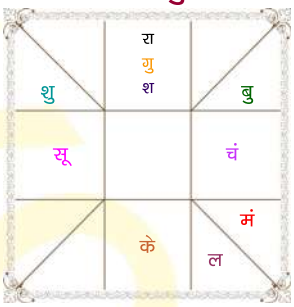

सर्वाष्टकवर्ग

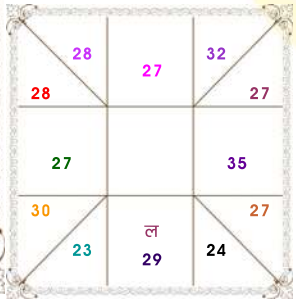

दशमांश कुंडली

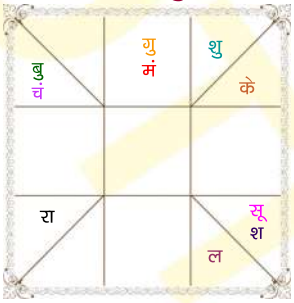

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।